

इखलास का नूर और दुनिया तलबी का अंधेरा

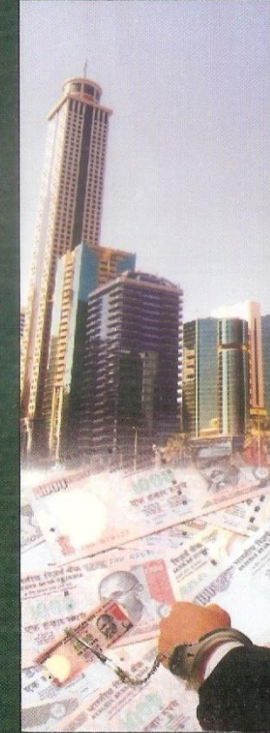
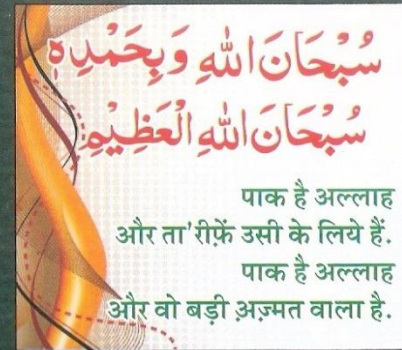
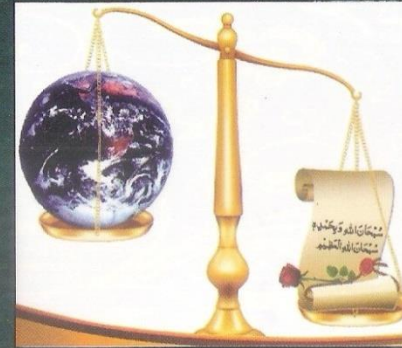
इखलास का मतलब है, कोई नेक काम भी अल्लाह की मर्जी के मुवाफ़िक़ (अनुरूप) और उसके रसूल (ﷺ) के सुन्नत तरीक़े के मुताबिक़ किया जाए. नेक व अच्छा काम करते वक़्त तक्रवा (अल्लाह का डर) रखना, इखलास की बुनियादी शर्त है.

रियाकारी का मतलब है, लोगों को दिखाने के लिये नेक काम करना. रियाकार कोई भी काम करते वक़्त ये देखता है कि 'लोग क्या कहेंगे?' या 'नी रियाकारी इखलास का उलट (विलोम) है.

आख़िरत के अजर को भूलकर सिर्फ़ दुनियावी फ़ायदा हासिल करने के लिये कोई नेक काम करना, नेक कामों के ज़रिये दुनिया तलब करना कहलाता है. इसमें रियाकारी और दुनियावी लालच दोनों शामिल हैं. मदरसों में इस्लाम की ता'लीम दी जाती है, मदरसा चलाने की ख़ातिर लोगों से मदद तलब की जा सकती है लेकिन अगर कोई शख्स उसका श्रेय (क्रेडिट) अपने ऊपर लेते हुए अपने फ़ायदे की ख़ातिर, अपने ख़ुद के लिये, किसी से कोई चीज़ चाहे तो यह नेक कामों के ज़रिये दुनिया तलब करना है.

इस किताब में इन तीनों मुद्दों पर तफ़्सील (विस्तार) से चर्चा की गई है. इसके साथ ही इसमें रियाकारी व दुनिया तलबी से बचने और इखलास हासिल करने के तरीक़े भी आसान ज़बान (भाषा) में बयान किये गये हैं. हमें उम्मीद है कि यह पाठकों के लिये मुफ़ीद (लाभप्रद) और ज्ञानवर्धक प्रभावित होगी, इंशाअल्लाह!

इखलास का नूर और दुनिया तलबी का अंधेरा



लेखक
सईद बिन अली अल कहतानी

हिन्दी अनुवाद
आदर्श मुस्लिम

प्रस्तावना

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और रहम वाला है।

किसी भी अमल की कुबूलियत के लिये दो बुनियादी शर्तों का पाया जाना बेहद जरूरी है। इनमें से किसी एक शर्त की कमी भी अमल की कुबूलियत में रूकावट बन जाती है। **पहली शर्त है कि वो अमल ख़ालिस अल्लाह के लिये किया गया हो और दूसरी शर्त है कि वो सुन्नते रसूल (ﷺ) के मुताबिक़ हो।** अल्लाह तआला ने इन दोनों शर्तों को कुआनि करीम की अनेक आयतों में बयान फ़र्माया है। नीचे लिखी आयते-करीमा में ये दोनों शर्तें एक साथ इशार्द हुई हैं,

‘जो शख्स अपने रब से मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो, उसे चाहिये कि नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे।’

(सूरह कहफ़ : 110)

‘जिसने मौत और ज़िन्दगी को इसलिये पैदा किया है ताकि तुम्हें आजमाए कि तुम में कौन अच्छा अमल करता है और वो ग़ालिब बख़्शने वाला है।’

(सूरह मुल्क : 2)

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ (रहि.) ने इनकी तफ़्सीर करते हुए यूँ फ़र्माया, ‘**अच्छा अमल, या’नी सबसे ख़ालिस (शुद्ध) और दुरुस्ततरीन अमल।**’ लोगों ने अज़ा किया, ‘ऐ अबू अली! सबसे ख़ालिस और दुरुस्त अमल क्या है?’ तो उन्होंने फ़र्माया, ‘अमल जब ख़ालिस अल्लाह के लिये हो मगर दुरुस्त न हो तो वो कुबूल नहीं होता। इसी तरह अगर अमल दुरुस्त हो लेकिन अल्लाह की रज़ा के लिये न हो तो भी कुबूल नहीं होता। ख़ालिस का मतलब ये है कि वो अमल अल्लाह की रज़ा के लिये किया गया हो और दुरुस्त का मतलब ये है कि वो सुन्नते-नबवी (ﷺ) के मुताबिक़ किया गया हो।’ (मदारिजुस्सालिकीन लि इब्ने क़य्यिम : 2/89)

इख़लास, इबादत की रूह है; इसके बग़ैर सारी इबादतें बेजान हैं लेकिन अफ़सोस का मक़ाम है कि मुस्लिम समाज पर एक ईमानदाराना नज़र डालने से ऐसा महसूस होता है कि जैसे इख़लास का पूरे तौर पर अकाल पड़ गया है।

नमाज़ की नमाज़ में इख़लास नहीं (वो नमाज़ को एक रस्म की तरह से अदा कर रहा है)। **रोज़ेदार के रोज़े में इख़लास नहीं** (वो सुबह से शाम तक भूखा रहने को रोज़ा समझ रहा है कि लेकिन रोज़े के फ़राइज़ पर दिल से अमल नहीं करता)। **सदका करने वाले के सद्के में इख़लास नहीं** (कहीं न कहीं उसमें भी कोई ख़ोट आ गया है। बहुत से मालदार लोग किसी छोटे कारोबारी की मदद करने के बजाय यह सोचते हैं कि मैं पैसा लगाकर उसके मुनाफ़े में पार्टनर कैसे बनूँ? उसके दिल में सद्का करने का ख़याल आने के बजाय पैसे से और ज़्यादा पैसा कमाने की भावना घर कर गई है)। **जो मुदरिस बच्चों को ता'लीम देता है वो भी इख़लास से ख़ाली है** (उसके नज़दीक कुआन पढ़ना सिखाना भी उसकी दीनी ज़िम्मेदारी नहीं बल्कि सिर्फ़ एक ट्यूशन है)। **तालिबे-इल्म (छात्र) की तलब में इख़लास नहीं** (वो भी किसी न किसी दुनियावी फ़ायदे को अपनी नज़र में रखता है)। **एक नौकर जब किसी के यहाँ नौकरी करता है तो उसके मन में भी अपने काम के प्रति इख़लास नहीं होता** (यहाँ तक कि वो बिना काम किये तनख़्वाह लेने में भी कोई शर्म महसूस नहीं करता)। **कहने का मतलब यह है कि ज़्यादातर लोग अपनी ज़िम्मेदारी इख़लास के साथ नहीं निभा रहे हैं, सिवाय उन लोगों के जिन पर अल्लाह ने ख़ास रहम व करम कर रखा है।**

आज हालत यह हो गई है कि तमाम आ'माल में इख़लास के बजाय रियाकारी (दिखावा), शोहरत, नाम की चाहत और दुनियावी फ़ायदे हासिल करने की चाहत ने ले ली है। ये एक बहुत बड़ा अलमिया (विडम्बना) है। जब सूरतेहाल ऐसी हो गई है तो फिर रियाकार, शोहरत-पसंद, दुनिया-परस्त लोगों को अल्लाह तआला की वो ने'मतें कैसे मिल सकती हैं, जिनका उसने अपने मुख़्लिस बन्दों से वा'दा कर रखा है।

यह किताब जो आपके हाथों में है, इसमें सऊदी अरबिया के नामी गिरामी साहिबे इल्म (विद्वान) **डॉक्टर सईद बिन अली अल क़हतानी** ने किताबो-सुन्नत की रोशनी में दलीलों के साथ बात की है और इस मौजूअ (विषय) का कम लफ़्ज़ों में मगर मुकम्मल अह्दाता करने की कोशिश की है। अल्लाह उन्हें जज़ा-ए-ख़ैर अता फ़र्माए, आमीन!

इसके साथ ही अल्लाह तआला से दुआ है कि इसके तमाम पढ़ने वालों को क़ौल व अमल में इख़लास अता फ़र्माए, आमीन! तक्ब्बल या रब्बल आलमीन!!

इनायतुल्लाह सनाबिली (मदीना तथ्यिबा)

मुक़द्दमा

इन्नल हम्दलिल्लाहि नहम्दुहु व नस्तईनुहु व नस्तफ़िरुहु, व नऊज़ुबिल्लाहि मिन शूरुरि अन्फुसिना व मिन सय्यिआति अअमालिना, मय्यहदिहिल्लाहु फ़ला मुज़िल्ललहु, व मय्युज़िल्ल फ़ला हादि यलहु, व अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीकलहु, व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु, सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिहि व अह्बाबिही व अतबाइहि व बारिक व सल्लिम- अम्मा बअद.

इख़लास का नूर व आख़िरत वाले अमल की जगह दुनिया-तलबी की तारीकियों (अंधेरों) के सिलसिले में यह एक छोटी सी किताब है जिसमें मैंने इख़लास का मफ़हूम व उसकी अहमियत और अच्छी निय्यत व उसका मक़ाम बयान किया है। नेक अमल के ज़रिये दुनिया तलब करने की ख़तरनाकी, दुनिया हासिल करने के लिये किये जाने वाले आ'माल की क़िस्में, रियाकारी (दिखावे) की ख़ौफ़नाकी और इसकी क़िस्में, आ'माल पर रियाकारी के अपरात और इख़लास हासिल करने के तरीक़े बयान किये हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि इख़लास; अल्लाह की नुसरत व मदद, अल्लाह के अज़ाब से नजात, दुनिया व आख़िरत में दर्जों की बुलन्दी का ज़रिया है। मुख़्लिस इन्सान से अल्लाह अज़्ज व जल और ज़मीनो-आसमान के तमाम लोग मुहब्बत करते हैं। हक़ीक़त में यह एक नूर है जिसे अल्लाह अपने बन्दों में से जिसके दिलों में चाहता है, नाज़िल फ़र्मा देता है। इशादि बारी तआला है,

'और जिसे अल्लाह तआला ही नूर अता न करे उसके पास कोई नूर नहीं होता।'
(सूरह नूर : 40)

जिन आ'माल से आख़िरत में कामयाबी मिल सकती है, उनके ज़रिये दुनिया तलब करना घटाटोप अंधेरे के समान है क्योंकि आख़िरत वाले कामों से दुनियावी चाहत रखना तौहीद के मनाफ़ी (विपरीत) है। यह बुराई जिस अमल में शामिल होती है उसे बर्बाद कर देती है। इशादि बारी तआला है,

'जो शख्स दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी ज़ीनत पर फ़रेप्ता (मोहित)

हुआ जाता है, मैं ऐसे लोगों के सारे आ'माल (का बदला) यहीं भरपूर पहुँचा देता हूँ और उन्हें यहाँ कोई कमी नहीं की जाती। हाँ! यही वो लोग हैं जिनके लिये आखिरत में सिवाय आग के और कुछ नहीं, और जो कुछ उन्होंने यहाँ किया होगा, वहाँ सब बेकार होगा और जो कुछ उनके आ'माल थे (वे) सब बर्बाद होने वाले हैं।' (सूरह हूद : 15-16)

मैंने इस बहर्ष को दो हिस्सों में बाँटा है। पहला, इखलास का नूर और दूसरा, उखरवी अमल के जरिये दुनिया-तलबी की तारीकियाँ। इन दोनों हिस्सों पर अनेक नुकात (पॉइण्ट्स) के तहत चर्चा की गई है।

मैं अल्लाह अज्ज व जल से, उसके इस्मे-आ'जम के वसीले से, सवाल करता हूँ क्योंकि जब इसके जरिये से सवाल किया जाता है तो वो जरूर अज्ञात करता है और जब इसके जरिये से दुआ की जाती है तो वो जरूर कुबूल करता है; कि वो इस थोड़े से अमल को मुबारक और खालिस अपनी रजा के लिये बनाए। इस किताब के मुअल्लिफ़ (लेखक), क़ारी (पाठक) नीज़ इसको हिन्दी में मुन्तक़िल व अनुवादित करने वाले, इस किताब को छापने वाले और इसकी नशरो-इशाअत (प्रचार-प्रसार) व आम लोगों तक पहुँचाने वाले तमाम लोगों को अजरे-अज़ीम से नवाज़े और इस काम की बरकत से उन सब को जन्नतुल फ़िरदौस में आ'ला मक़ाम अता फ़र्माए, आमीन!! मैं अल्लाह रब्बुल इज्जत से उसके तमाम नामों के जरिये से सवाल करता हूँ कि इस किताब को मेरी ज़िन्दगी में और मरने के बाद भी नफ़ा-बख़्श बनाए और जिस शख्स तक भी ये किताब पहुँचे, उसे इसके जरिये फ़ायदा पहुँचाए। आमीन! तक्रबूल या रब्बल आलमीन!!

बेशक अल्लाह की ज्ञात सबसे बेहतर है जिससे सवाल किया जाता है, वो इन्तिहाई करीम है जिससे उम्मीदें लगाई जाती हैं; वही हमारे लिये काफ़ी व बेहतरीन कारसाज़ है। नेकी की तौफ़ीक़ देना और गुनाहों से कामों से बचने की ताक़त देना, उसी अल्लाह रब्बुल आलमीन के क़ब्ज़-ए-कुदरत में है जो हर चीज़ पर क़ादिर है।

डॉ. सईद बिन अली अल क़हतानी
(लेखक)

पहला हिस्सा : इखलास का नूर

इखलास का मा'नी व मफ़हूम

सबसे पहले हम ये देखें कि इखलास का लुगवी (शाब्दिक) मतलब क्या है? 'खलस यखलुस खलूसन्' के मा'नी साफ़ होने और मिलावट का ख़त्म हो जाना है। कहा जाता है, 'खलस मिन वरततह' या'नी वो अपने भंवर से महफूज़ रहा और नजात पा गया। और कहा जाता है, 'खलस तखलीसन्' या'नी उसने छुटकारा और नजात दिलवाई। इताअत (पैरवी करने) में इखलास का मा'नी रियाकारी (दिखावा) छोड़ देने के है। (अल मुअज्जमुल औसत : 1/249; मुख्तारुस्सिहाह पेज नं. 77)

इसके बाद हम देखते हैं कि इखलास की हकीक़त या इस्तिलाही ता'रीफ़ क्या है? इखलास की हकीक़त ये है कि बन्दा अपने अमल से सिर्फ़ एक अल्लाह की कुर्बत (निकटता) का तलबगार हो। अहले इल्म ने इखलास की कई ता'रीफ़ें नक़ल की हैं जो एक-दूसरे से करीब-करीब (मिलती-जुलती) हैं।

01. अल्लाह सुबहानहू व तआला को बन्दगी व इताअत (पैरवी) में तन्हा मक्मूद (एकमात्र लक्ष्य) जानना इखलास कहलाता है।
02. इखलास ये है कि बन्दा अपने ज़ाहिर (दिखने वाले) और बातिन (छुपे हुए) आ'माल की दोनों सूरतों में एक जैसा हो। रियाकारी यह है कि बन्दे का ज़ाहिर उसके बातिन से बेहतर व अच्छा हो और सच्चा इखलास ये है कि बन्दे का बातिन उसके ज़ाहिर से ज़्यादा बेहतर, पुख़्ता (ठोस) और पाएदार (टिकाऊ) हो।
03. अपने अमल को हर क्रिस्म की मिलावट से پاک व साफ़ रखना, इखलास कहलाता है। (मदारिजुस्सालिकीन लि इब्ने क़य्यिम : 2/91)

इन ता'रीफ़ों (परिभाषाओं) से वाज़ेह हो जाता है कि इखलास, अमल को वाहिद अल्लाह की तरफ़ फेरने और उसकी कुर्बत (नज़दीकी) हासिल करने का नाम है। सच्चा इखलास वो है जिसमें रिया व नमूद (दिखावा) और फ़ना (नष्ट) हो जाने वाले दुनियावी

इस्लाम का मूल

8

Aqaid-ul-Islam

साज़ो-सामान की तलब और बनावट न हो बल्कि बन्दा अल्लाह वाहिद से प्रवाब की उम्मीद करे; उसके अज़ाब से डरे और उसकी रज़ामंदी का हरीस (लालची) हो।

इसीलिये इमाम काज़ी अयाज़ (रहि.) फ़र्माते हैं, 'लोगों की वजह से अमल छोड़ देना रियाकारी और लोगों की ख़ातिर अमल करना शिर्क है। इख़लास ये है कि अल्लाह तआला तुम्हें इन दोनों चीज़ों से बचाए रखे।' (मदारिजुस्सालिकीन लि इब्ने क़य्यिम : 2/91)

मुसलमान की ज़िन्दगी में इख़लास ये है कि वो अपने क़ौल, अमल, तमाम व्यवहार व मामलात, सारी ता'लीमात व तौजीहात (शिक्षाओं व स्पष्टीकरणों) से सिर्फ़ एक अल्लाह की ज़ात का इरादा करे जिसका न कोई शरीक है और न उसके सिवा कोई और पालनहार है।

इख़लास की अहमियत

अल्लाह तआला ने तमाम मख़लूक या 'नी जिन्नो व इन्सानो को सिर्फ़ और सिर्फ़ अपनी इबादत के लिये पैदा किया है, जिसका कोई शरीक नहीं और उसने तमाम मुकल्लिफ़ीन (जिन पर शरीअत के अहकाम लागू होते हैं), को इख़लास ही का हुक्म दिया है। कुआनि करीम में अनेक मक़ाम पर इशादि बारी तआला है,

- * 'और उन्हें सिर्फ़ इस बात का हुक्म दिया गया है कि वो सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करें, उसी के लिये दीन को ख़ालिस करते हुए।' (सूरह बय्यिनह : 5)
- * 'यक़ीनन मैंने इस किताब को आपकी तरफ़ हक़ के साथ नाज़िल फ़र्माया है, लिहाज़ा आप मेरी ही इबादत करें, इसी के लिये दीन को ख़ालिस करते हुए; ख़बरदार! दीने-ख़ालिस अल्लाह ही का हक़ है।' (सूरह जुमर : 2-3)
- * 'आप कह दीजिये कि बेशक मेरी नमाज़, और मेरी कुर्बानी, और मेरा जीना और मेरा मरना, उस अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिये है जो सारे ज़हान का पालनहार है; उसका कोई शरीक नहीं और इसी बात का मुझको हुक्म दिया गया है और मैं सबसे पहला मुस्लिम हूँ।' (सूरह अन्आम : 162-163)
- * 'जिसने मौत व ज़िन्दगी को इसलिये पैदा किया कि तुम्हें आजमाए कि तुम मैं कौन अच्छा अमल करता है।' (सूरह मुल्क : 2)

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ (रहि.) फ़र्माते हैं, 'अच्छा अमल, या'नी सबसे ख़ालिस (शुद्ध) और दुरुस्ततरीन अमल।' लोगों ने अर्ज़ किया, 'ऐ अबू अली! सबसे ख़ालिस और दुरुस्त अमल क्या है?' तो उन्होंने फ़र्माया, 'अमल जब ख़ालिस अल्लाह के लिये हो मगर दुरुस्त न हो तो वो कुबूल नहीं होता। इसी

तरह अगर अमल दुरुस्त हो लेकिन अल्लाह की रज़ा के लिये न हो तो भी कुबूल नहीं होता। ख़ालिस का मतलब ये है कि वो अमल अल्लाह की रज़ा के लिये किया गया हो और दुरुस्त का मतलब ये है कि वो सुन्नते-नबवी (ﷺ) के मुताबिक़ किया गया हो।' (मदारिजुस्सालिकीन लि इब्ने क़य्यिम : 2/89)

इसके बाद उन्होंने नीचे लिखी आयत तिलावत फ़र्माई,

'कह दीजिये कि मैं भी तुम्हारे जैसा ही एक इन्सान हूँ, मेरी तरफ़ वहत्य की जाती है कि यक़ीनन मेरा मा'बूद एक ही मा'बूदे-बरहक़ है, तो जो शख़्स अपने रब से मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो उसे चाहिये कि नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे।' (सूरह कटफ़ : 110)

'दीन के ए'तिबार से उस शख़्स से अच्छा और कौन हो सकता है जो अपने आप को अल्लाह के ताबेअ कर दे और नेकोकार हो।' (सूरह निसा : 125)

'इस्लाम' अल्लाह वाहिद के लिये अमल को ख़ालिस करने का नाम है और 'इहसान' रसूलुल्लाह (ﷺ) की इत्तिबा और आप (ﷺ) की सुन्नते तय्यिबा की पैरवी का नाम है। (मदारिजुस्सालिकीन लि इब्ने क़य्यिम : 2/90)

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) की रिवायतशुदा हदीज़ में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इशाद फ़र्माया, 'तीन चीज़ें ऐसी हैं जिनमें मुसलमान का दिल ख़यानत नहीं करता; (पहली), अल्लाह के लिये इख़लास के साथ अमल; (दूसरी), हाकिमों व अमीरों की ख़ैरख़वाही; और (तीसरी), मुसलमानों की जमाअत को लाज़िम पकड़ना क्योंकि उनकी दुआ उन्हें उनके पीछे से घेरे होती है।' (सुनन तिर्मिज़ी : 2658 ब-रिवायत हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि.; मुस्नद अहमद : 5/183)

इख़लास मुसलमानों के अमल की रूह (कर्मों की आत्मा) और उसकी सबसे अहम ख़ूबी होती है। इख़लास के बग़ैर उसकी सारी कोशिश और कारकदगी बिखरे हुए ज़रों (कर्मों) की तरह होती है। अइम्म-ए-इस्लाम का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि इख़लास दिल के अहमतररीन आ'माल (कर्मों) में से है और इसमें कोई शक़ नहीं कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की मुहब्बत, अल्लाह पर तवक्कल व भरोसा, उसके लिये इख़लास, उससे डरने और उसी से उम्मीद रखने के लिये दिल के आ'माल ही असल व बुनियाद हैं। उसके जिस्म का हर एक अंग और उनके अमल इसके ताबेअ (अधीन) होते हैं क्योंकि निय्यत की हैप्पियत रूह जैसी और अमल की हैप्पियत जिस्म के अंगों जैसी होती है। जब जिस्म का रिश्ता रूह से टूटता है तो इन्सान मर जाता है, इसलिये दिलों के अहकाम की मा'रिफ़त जिस्म के अंगों की मा'रिफ़त (परिचय) से ज़्यादा अहम व ज़रूरी है।

लिहाजा मुसलमान पर वाजिब है कि वो अल्लाह अज़्ज व जल के लिये मुख़िलफ़ हो। वो रिया व नमूद (दिखावे) और लोगों की मदह व सताइश (ता'रीफ़ व प्रशंसा) की ख़्वाहिश (इच्छा) न करे, बल्कि सिर्फ़ अल्लाह अज़्ज व जल की ज़ात का इरादा करे और उसी की ख़ुशनुदी के लिये नेक काम अंजाम दे और लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाए। जैसा कि इशादि बारी तआला है,

'कह दीजिये कि ये मेरा रास्ता है। मैं अल्लाह की तरफ़ दा'वत देता हूँ।'

(सूरह यूसुफ़ : 108)

'उस शख़्स से बेहतर बात और किसकी हो सकती है जो अल्लाह की तरफ़ दा'वत दे रहा हो।'

(सूरह हाम् मीम सज्दा : 33)

इख़लास, मुसलमानों पर वाजिब होने वाला सबसे अज़ीम गुण है ताकि वो अपनी दा'वत (आमंत्रण) व अमल (कर्म) के ज़रिये सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा (प्रसन्नता) और आख़िरत (जन्नत) का तलबगार हो और वो लोगों की इस्लाह और उन्हें तारीकियों (अंधेरीयों) से निकालकर रोशनी की तरफ़ लाने की चाहत रखता हो। (मज्मूअ फ़तावा सिमाह तुशौख़ इब्ने बाज़ रहि. : 1/349, 4/229)

अच्छी निय्यत का मक़ाम और उसके नतीजे

निय्यत अमल की बुनियाद (नींव) और उसका सुतून (खम्भा) है, जिस पर अमल का दारोमदार है। निय्यत अमल की रूह, उसकी क़ाइद (लीडर) और रहबर (मार्गदर्शक) है और अमल निय्यत के ताबेअ (अधीन) है। अमल का सहीह या ख़राब होना, निय्यत के सहीह या ख़राब होने पर मौकूफ़ (आधारित) है। नेकनिय्यती से अल्लाह की तौफ़ीक़ और बदनिय्यती से रुस्वाई हासिल होती है। निय्यत ही के ए'तिबार से दुनिया व आख़िरत के मर्तबों और दर्जों में फ़र्क़ आता है। इसीलिये नबी करीम (ﷺ) का इशाद है,

'आ'माल का दारोमदार निय्यत पर है; और हर शख़्स के लिये वही है जिसकी उसने निय्यत की।'

(मुत्तफ़कुन अल्लैह/बुख़ारी व मुस्लिम)

इसी तरह अल्लाह अज़्ज व जल का इशाद है,

'उनके अक़्सर ख़ुफ़िया मश्वरों में कोई ख़ैर नहीं; हाँ! भलाई उसके मश्वरों में है जो ख़ैर का या नेक बात का या लोगों में सुलह कराने का हुक्म दे, और जो शख़्स सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ामंदी हासिल करने के इरादे से ये काम करे, उसे मैं यक़ीनन बहुत बड़ा अज़्ज व प्रवाब दूँगा।'

(सूरह निसा : 114)

ये इशादि रब्बानी निय्यत के मक़ाम व मर्तबा और उसकी अहमियत पर दलील

देता है। अल्लाह की तरफ़ दा'वत देने वालों और दीगर मुसलमानों के लिये निय्यत की इस्लाह ज़रूरी है। याद रखिये! अगर निय्यत सहीह होगी तो बन्दा बेशुमार अज़्ज व प्रवाब से नवाज़ा जाएगा, यहाँ तक कि अगर किसी ने नेक काम के लिये सच्ची निय्यत की हो और वो अमल न कर पाया हो तब भी उसे प्रवाब मिलेगा। नबी करीम (ﷺ) का इशाद है,

'जब बन्दा बीमार हो जाए या हालते सफ़र में हो तो भी हालते-इक़ामत व सिहतमंदी के अमल की तरह उसका अमल (और अज़्ज) लिखा जाता है।'

(बुख़ारी : 4/200, हदीष नं. : 2996)

'जिस शख़्स का भी रात में उठकर नमाज़ पढ़ने का मा'मूल (रूटीन) होता है और कभी उस पर नींद ग़ालिब (हावी) आ जाती है तो उसके लिये नमाज़ का प्रवाब लिख दिया जाता है और उसकी नींद उसके लिये सदका करार पाती है।'

(अबू दाऊद : 1314; निसाई : 1784)

'जो शख़्स ख़ूब अच्छी तरह वुज़ू करता है और फिर मस्जिद जाता है और देखता है कि लोग नमाज़ से फ़ारिग़ हो चुके हैं तो अल्लाह उसे मस्जिद में हाज़िर होकर नमाज़ अदा करने वालों के बराबर प्रवाब अता फ़र्माता है, इससे उसके अज़्ज में कोई कमी नहीं आती।'

(अबू दाऊद : 564; निसाई : 855)

'जो शख़्स अल्लाह तआला से सच्ची निय्यत से शहादत माँगता है तो अल्लाह उसे शहादत के मर्तबे तक पहुँचाता है, चाहे उसकी मौत उसके बिस्तर पर ही हुई हो।'

(सहीह मुस्लिम : 1909)

ये चीज़ बन्दों पर अल्लाह तआला के एहसानों पर दलील देती है।

नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-तबूक के मौक़े पर इशाद फ़र्माया, 'तुम मदीना में कुछ ऐसे लोगों को छोड़कर आए हो कि तुम जिस रास्ते से भी गुज़रते हो या जो कुछ भी ख़र्च करते हो या जो भी वादी तय करते हो, वो उसमें तुम्हारे साथ होते हैं।' सहाब-ए-किराम (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, 'ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! वो मदीना में हैं तो हमारे साथ कैसे हो सकते हैं?' आप (ﷺ) ने फ़र्माया, 'उन्हें उज़्ज (शरअी कारण) ने रोक रखा है।' (सहीह बुख़ारी : 2839; अबू दाऊद : 2508; हदीष के अल्फ़ाज़ सुनन अबू दाऊद के हैं)

नेक निय्यत के कारण अल्लाह तआला मा'मूली से अमल को भी कई गुना कर देता है। एक बार लोहे (हथियारों) से लैस एक शख़्स रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया और कहने लगा, 'ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मैं क़िताल करूँ या इस्लाम लाऊँ?' आप (ﷺ) ने फ़र्माया, 'पहले इस्लाम लाओ, फिर जिहाद करना।' उसने

इस्लाम कुबूल किया फिर (अल्लाह की राह में) लड़ता रहा यहाँ तक कि शहीद हो गया, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसके बारे में इर्शाद फ़र्माया, **‘अमल क़लीलन् व अज्र क़षीरा (उसने अमल थोड़ा किया और ज़्यादा अज्र से नवाज़ा गया)।’** (बुख़ारी : 2808; मुस्लिम : 1900; हदीष के अल्फ़ाज़ बुख़ारी के हैं।)

एक शख़्स रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप (ﷺ) उसे इस्लाम के अहक़ाम सिखा रहे थे और वो अपने ऊँट पर रवाना हुआ था कि उसके ऊँट का पैर नेवले के बिल में जा फंसा और उसने उसे नीचे गिरा दिया जिससे उसकी मौत हो गई। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, **‘अमल क़लीलन् व अज्र क़षीरा (उसने अमल थोड़ा किया और ज़्यादा अज्र से नवाज़ा गया)।’** हम्माद ने इस बात को तीन बार दोहराया। (मुस्नद अहमद : 4/357)

नेक निर्यती से अल्लाह तआला मुबाह्र आ'माल (जाइज़ कर्मों) में बरकत अता फ़र्माता है, जिस पर बन्दे को प्रवाब मिलता है। इसीलिये अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, **‘जब बन्दा अपने अहलो-अयाल (बीवी-बच्चों) पर प्रवाब हासिल करने की निर्यत से खर्च करता है तो वो उसके लिये सद्का होता है।’** (सहीह बुख़ारी : 55; सहीह मुस्लिम : 1002)

नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत सअद बिन अबी वक्रास (रज़ि.) से इर्शाद फ़र्माया, **‘तुम अल्लाह की रज़ा और खुशनूदी के लिये जो कुछ खर्च करोगे, तुम्हें उस पर अज्र मिलेगा; यहाँ तक कि जो लुक्मा तुम अपनी बीवी के मुँह में डालोगे उसमें भी (तुम्हें अज्र मिलेगा)।’** (सहीह बुख़ारी : 56; सहीह मुस्लिम : 1628)

नेक निर्यत का आ'माल व अज्र पर कितना अषर पड़ता है यह जानने के लिये इस हदीष का पढ़ लेना मुफ़ीद (लाभप्रद) होगा। अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया,

‘दुनिया में चार क्रिस्म के लोग होते हैं। एक वो बन्दा जिसे अल्लाह ने माल और इल्म से नवाज़ा है, उसमें वो अपने रब से डरता है और सिलारहमी करता है और उसमें अल्लाह के लिये हक़ जानता है; ऐसा शख़्स सबसे अफ़ज़ल मर्तबे पर फ़ाइज़ है। दूसरा वो बन्दा जिसे अल्लाह ने इल्म से नवाज़ा है और माल से महरूम रखा है लेकिन वो बन्दा नेक निर्यत से कहता (तमन्ना करता) है कि अगर मेरे पास माल होता तो मैं फ़लां की तरह खर्च करता; तो उसकी निर्यत का ए'तिबार होगा और दोनों को एक जैसा अज्र मिलेगा। तीसरा वो जिसे अल्लाह ने माल अता फ़र्माया है लेकिन इल्म से महरूम रखा है तो वो बग़ैर इल्म के अपने माल

में से खर्च करता है, न उसमें अल्लाह से डरता है और न सिलारहमी करता है और न ही उसमें अल्लाह का कोई हक़ जानता है; तो ऐसा शख़्स बदतरिन दर्जे का आदमी है। चौथा वो शख़्स जिसे अल्लाह ने दौलत और इल्म दोनों से महरूम रखा है, तो वो कहता है कि मेरे पास माल होता तो मैं फ़लां (तीसरे क्रिस्म के शख़्स) की तरह खर्च करता तो उसकी निर्यत का ए'तिबार होगा; चुनाँचे उन दोनों का गुनाह एक जैसा है।’ (तिर्मिज़ी : 2325; इब्ने माजा : 4228; मुस्नद अहमद : 4/130)

एक हदीषे-कुद्सी में नबी करीम (ﷺ) ने अपने रब से रिवायत करते हुए इर्शाद फ़र्माया, **‘अल्लाह अज़्ज व जल ने नेकियाँ व बुराइयाँ लिख दीं; फिर उसकी वज़ाहत फ़र्माई, जिसने नेकी का इरादा किया और उसे अमलन् अंजाम न दे सका तो अल्लाह तआला उसे अपने पास पूरी नेकी लिखता है।’**

(सहीह बुख़ारी : 6491; सहीह मुस्लिम : 131)

इख़लास के फ़ायदे और नतीजे

इख़लास के बड़े अच्छे फल और बड़े अज़ीम व जलिलुल क़द्र (महान व सम्माननीय) फ़ायदे हैं, जिनमें से कुछ फ़ायदे नीचे लिखे जा रहे हैं।

01. दुनिया व आख़िरत की तमाम भलाइयाँ, इख़लास के फ़ज़ाइल व बदले में से हैं।

02. इख़लास, आ'माल की कुबूलियत का सबसे अज़ीम सबब है, बशर्त कि इसमें नबी करीम (ﷺ) की इत्तिबा शामिल हो।

03. इख़लास के नतीजे में मोमिन बन्दे को अल्लाह और उसके फ़रिश्तों की मुहब्बत हासिल होती है और ज़मीन (पर रहने वालों के दिलों) में उसकी मक्बूलियत (लोकप्रियता) लिख दी जाती है।

04. इख़लास अमल की बुनियाद (नींव) और रूह (आत्मा) है।

05. थोड़े से अमल और मा'मूली दुआ पर बेशुमार अज्र व अज़ीम प्रवाब मिलता है।

06. मुख़िलस बन्दे का हर अमल, जिससे अल्लाह की खुशनूदी मक़सूद हो, लिखा जाता है, बशर्त कि वो अमल मुबाह्र (जाइज़) हो।

07. मुख़िलस इन्सान जिस नेक अमल की निर्यत करता है वो भी अल्लाह के यहाँ लिख लिया जाता है, भले ही वो उसे अंजाम न दे सके।

08. मुख़िलस बन्दा अगर सो जाए या भूल जाए तो मा'मूल के मुताबिक़ जो अमल वो करता था, उसे अल्लाह के यहाँ लिखा जाता है।

09. अगर मुख़्तलस बन्दा बीमार हो जाए या सफ़र की हालत में हो तो उसके इख़लास की वजह से उसके लिये वही अमल लिखा जाता है जो वो इक़ामत (शहर में रहने के दौरान) और तन्दुरुस्ती के दौरान किया करता था।
10. इख़लास के कारण अल्लाह तआला उम्मत की मदद फ़र्माता है।
11. इख़लास आख़िरत के अज़ाब से नजात दिलाता है।
12. दुनिया व आख़िरत की मुसीबतों से नजात इख़लास के नतीजों में से है।
13. इख़लास की वजह से आख़िरत में दर्जे बुलन्द किये जाते हैं।
14. इख़लास की वजह से गुमराही से नजात मिलती है।
15. इख़लास हिदायत व रहनुमाई में बढ़ोतरी का सबब बनता है।
16. लोगों में नेकनामी (लोकप्रियता) होना, इख़लास ही की परिणाम है।
17. इससे दिलों को इत्मीनान मिलता है और नेकबख़्ती का एहसास होता है।
18. इख़लास से दिल में ईमान की रौनक व आराइश होती है।
19. इख़लास से मुख़्तलस लोगों की सुहबत की तौफ़ीक़ मिलती है।
20. इख़लास से हुस्ने-खात्मा (ईमान पर मौत) नसीब होती है।
21. इख़लास की बरकत से अल्लाह की बारगाह में दुआएं कुबूल होती हैं।
22. इसकी वजह से क़र्र में ने'मत व शादमानी (ख़ुशियों) की बशारत मिलती है।
23. इख़लास की वजह से जन्नत में दाख़िला और जहन्नम से नजात नसीब होती है।

इन तमाम फ़ायदों और नतीजों की दलीलें किताबों-सुन्नत में क़र्रत (बहुतायत) के साथ मौजूद हैं। मैं अल्लाह अज़्ज व जल से अपने और तमाम मुसलमान भाइयों के लिये क़ौल व अमल में इख़लास का सवाल करता हूँ।

नोट :

01. इस्लामी शरीअत की रू से सवाल करने का मतलब माँगना होता है।
02. मैटर के फैलाव से बचने के लिये हर हदीष के साथ हदीष की किताब का नाम व हदीष नं. ही दिया गया है।
03. इस किताब में हदीषों से मुता'ल्लिक़ जितने भी हवाले दिये गये हैं वे तमाम सहीह व हसन दर्जे के हैं। अल्हम्दुलिल्लाह इसमें कोई भी ज़ईफ़ या मौज़ूअ हदीष बतौर दलील पेश नहीं की गई है।

दूसरा हिस्सा : उख़रवी अमल से दुनिया तलबी

ये बड़ी ख़तरनाक बात है कि इन्सान कोई नेक अमल करे और उसके ज़रिये दुनियावी साज़ो-सामान पाने की चाहत रखता हो। **ये शिर्क है, जो तौहीदे वाजिब के कमाल के खिलाफ़ और अमल को बर्बाद करने वाला काम है।** ये रियाकारी (दिखावे) से भी संगीनतरिन है क्योंकि दुनिया चाहने वाले का इरादा उसके बहुत सारे आ'माल पर ग़ालिब (हावी) होता है जबकि रियाकारी किसी अमल में पाई जाती है और किसी अमल में नहीं पाई जाती। सच्चा मोमिन इन दोनों ही चीज़ों से दूर रहता है।

उख़रवी अमल से दुनिया तलबी और रियाकारी में फ़र्क़

इन दोनों कामों के बीच फ़र्क़ ये है कि इनमें इमूम (सार्वजनिक) व ख़ुसूस (विशिष्टता) की निस्बत है। या'नी इस चीज़ में दोनों मुश्तरक (कॉमन) हैं कि इन्सान अपने अमल को लोगों के सामने बना-संवारकर पेश करे ताकि लोग उसे देखकर उसकी ता'ज़ीम (सम्मान) व ता'रीफ़ करें। ये रियाकारी और दुनिया-तलबी दोनों हैं क्योंकि इसमें लोगों के सामने दिखावा करने और उनसे इज़्जत व ता'रीफ़ पाने की चाहत शामिल है।

रहा दुनिया के लिये अमल करना तो वो यह है कि कोई शख़्स नेक अमल करे जिसे लोगों को दिखाना मज़सूद (वांछित) न हो बल्कि उससे कोई दुनियावी साज़ो-सामान हासिल करने की चाहत हो। **जैसे कोई शख़्स किसी से माल हासिल करने की ग़रज़ से हज्ज (हज्जे बदल) करे; या माले-ग़नीमत हासिल करने की खातिर जिहाद करे; या रुपया-पैसा हासिल करने की निय्यत से वअज़ व तक्ररीर करे; या सिर्फ़ नज़राना हासिल करने के लिये कुआन की तिलावत करे, वग़ैरह।** या'नी रियाकार शख़्स लोगों की ता'रीफ़ पाने के लिये अमल करता है जबकि दुनिया के लिये अमल करने वाला शख़्स दुनियावी साज़ो-सामान व मालो-मताअ हासिल करने के लिये नेक अमल करता है और दोनों ही तरह के लोग ख़सारा (घाटा) उठाने वाले हैं।

हम अल्लाह अज़्ज व जल के ग़ज़ब को वाजिब करने वाली चीज़ों और उसके दर्दनाक अज़ाब से अल्लाह की पनाह चाहते हैं। कुछ ऐसे नुसूस वारिद हुए हैं जो दुनिया व आख़िरत में इस अमल वाले के घाटा उठाने पर दलालत करते हैं। इशादि बारी तआला है,

- * 'जो शख्स दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी ज़िन्दगी पर फ़रेफ़ता (मोहित) हुआ जाता है, मैं ऐसे लोगों के सारे आ'माल (का बदला) यहीं भरपूर पहुँचा देता हूँ और उन्हें यहाँ कोई कमी नहीं की जाती। हाँ! यही वो लोग हैं जिनके लिये आख़िरत में सिवाय आग के और कुछ नहीं, और जो कुछ उन्होंने यहाँ किया होगा, वहाँ सब बेकार होगा और जो कुछ उनके आ'माल थे (वे) सब बर्बाद होने वाले हैं।' (सूरह हूद : 15-16)
 - * 'जिसका इरादा इस जल्दी वाली दुनिया (फ़ौरी फ़ायदा) का ही हो उसे मैं यहाँ जिस क़दर जिसके लिये चाहूँ सरदस्त कर देता हूँ, फिर मैं उसके लिये जहन्नम मुक़र्रर कर देता हूँ जहाँ वो बुरे हाल में धुत्कारा हुआ दाख़िल होगा।' (सूरह बनी इस्राईल : 18)
 - * 'जिसका इरादा आख़िरत की खेती का हो, मैं उसे उसकी खेती में तरक्की दूंगा और जो दुनिया की खेती की तलब रखता हो, मैं उसे इसी में ही सब-कुछ दे दूंगा और ऐसे शख्स के लिये आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं।' (सूरह शूरा : 20)
 - * 'कुछ लोग ऐसे (भी) हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे ख़! हमें दुनिया में दे, ऐसे लोगों के लिये आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं।' (सूरह बक़र : 200)
- और नबी करीम (ﷺ) ने इश़ाद फ़र्माया,
- * 'जो कोई अल्लाह अज़्ज व जल की खुशनुदी की खातिर हासिल किया जाने वाला इल्म महज़ किसी दुनियावी साज़ो-सामान हासिल करने के लिये सीखे वो क़यामत के दिन जन्नत की खुशबू तक नहीं पाएगा।' (अबू दाऊद : 3664; इब्ने माजा : 252)
 - * 'इस मक़सद के लिये इल्म हासिल न करो कि उसके ज़रिये तुम इलमा पर फ़ख़र करो, न इसलिये कि इसके ज़रिये कम इल्मों से बह़ष-मुबाहिषा करो, और न इसलिये कि इसके ज़रिये मजलिसों का इंतज़ाब करो, जिसने ऐसा किया उसके लिये जहन्नम है।' (सुनन इब्ने माजा : 254)
 - * 'तीन मक़सदों के लिये इल्म हासिल न करो; बेवकूफ़ों से बह़ष करना, इलमा से झगड़ा और मुनाज़रा करना, और इसके ज़रिये से लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करना, बल्कि अपने क़ौल से वो चीज़ (जन्नत) तलब करो जो अल्लाह के पास है क्योंकि वही चीज़ बाक़ी रहने वाली है और जो कुछ उसके अलावा है वो ख़त्म हो जाने वाला है।' (सुनन दारमी : 1/70; इब्ने माजा : 260)

ऊपर बयान की गई तमाम अह्दादीष से यह बात वाज़ेह होती है कि दीने-इस्लाम का इल्म अगर दुनियावी गरज़ के लिये हासिल किया जाए तो वह आख़िरत में कोई फ़ायदा नहीं देगा बल्कि चाहा गया फ़ायदा दुनिया ही में मिल जाने की वजह से उसे जहन्नम में जाना पड़ेगा। जो काम सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिये किया जाए, उसके लिये अल्लाह तआला ने नेकबख़्ती की ज़मानत ली है। हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है,

'जिसकी फ़िक्र आख़िरत (पर केन्द्रित) होगी, अल्लाह तआला उसकी मालदारी उसके दिल में कर देगा, उसके बिखरे हुए कामों को इकट्ठा कर देगा और दुनिया उसके पास ज़लील होकर आएगी। और जिसकी फ़िक्र दुनिया (पर केन्द्रित) होगी अल्लाह तआला उसकी फ़क़ीरी को उसकी दोनों आँखों के बीच (पेशानी पर) कर देगा, उसके कामों को बिखेर देगा और दुनिया भी उसे उतनी ही मिलेगी जितनी उसके लिये मुक़द्दर है।'

(तिर्मिज़ी : 2465; इब्ने माजा : 4108)

दुनिया की खातिर अमल करने की किस्में

दुनिया की खातिर अमल की कई किस्में हैं। इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब (रहि.) ने ज़िक्र किया है कि इस सिलसिले में सलफ़-सालिहीन से चार किस्में नक़ल की जाती हैं।

पहली किस्म : वो नेक अमल जिसे बहुत से लोग अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिये करते हैं; जैसे स़दका, नमाज़, लोगों पर एहसान, जुल्म को रोकना वग़ैरह। इन कामों को इन्सान ख़ालिस अल्लाह के लिये करता है या छोड़ता है; लेकिन आख़िरत में उसका प्रवाब नहीं चाहता **बल्कि वो चाहता है कि अल्लाह तआला उसके बदले में उसके माल की हिफ़ाज़त करे और उसे बढ़ाए, या उसकी और उसके अहलो-अयाल पर अपनी ने'मतें बाक़ी रखे, उसे जन्नत हासिल करने और जहन्नम से नजात की कोई फ़िक्र नहीं होती तो ऐसे शख्स को उसके नेक अमल का प्रवाब दुनिया ही में अत्ता कर दिया जाता है।** आख़िरत में ऐसे शख्स के लिये कोई हिस्सा नहीं होगा। ये क़ौल हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से रिवायतशुदा है।

दूसरी किस्म : ये पहली किस्म से भी ख़तरनाक और ख़ौफ़नाक (भयानक) है। कोई इन्सान नेक अमल अंजाम दे और उसकी निर्यत आख़िरत का प्रवाब तलब करना नहीं बल्कि लोगों को दिखाना हो। ये हज़रत मुजाहिद (रहि.) का क़ौल है।

तीसरी किस्म : इन्सान नेक आ'माल अंजाम दे और उससे माल कमाना मक़सूद हो। मिश्राल के तौर पर माल की खातिर किसी की तरफ़ से हज़्जे-बदल करना, या दुनिया की

दौलत पाने के लिये हिजरत करे, या माले-गनीमत पाने की खातिर जिहाद करे, या डिग्री हासिल करने या कोई मंसब (पद, ओहदा) पाने के लिये इल्म हासिल करे, या सिर्फ मस्जिद में मुलाजमत (इमामत) या दीगर दीनी नौकरियाँ हासिल करने के लिये कुर्आन का इल्म हासिल करे। इन तमाम कामों को करते वक़्त, इन नेक कामों को करने वाले के मन में अल्लाह को राज़ी रखना मत्सूद न हो, ऐसे लोगों के लिये आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होगा क्योंकि उनका मुआवज़ा उनको दुनिया में मिल चुका होता है।

चौथी क्रिस्म: इन्सान ख़ालिस अल्लाह वहदहु ला शरीकलहु के लिये इताअत का काम अंजाम दे लेकिन साथ ही वो इस्लाम से ख़ारिज कर देने वाले किसी कुफ़्रिया अमल का मुर्तकिब (करने वाला) भी हो। मिश्राल के तौर पर कोई इन्सान नेकी के काम करने के साथ-साथ इस्लाम को तोड़ने (या उसे नुक्सान पहुँचाने) वाला अमल भी करे। ये क्रिस्म हज़रत अनस (रज़ि.) वग़ैरह से बयान हुई है।

लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिये कि इन तमाम चीज़ों से बचता रहे जो उसके नेक अमल को बर्बाद कर दे और अल्लाह तआला के ग़ज़ब व गुस्से का सबब बने। मुसलमानों को इन तमाम बुरे आ'माल से बचना चाहिये। हम इन तमाम चीज़ों से अल्लाह की पनाह चाहते हैं।

रियाकारी की ख़तरनाकी और उसके नुक्सानात

रियाकारी (दिखावे) की ख़तरनाकी, फ़र्द (एकल व्यक्ति), मुआशरा (समाज) और पूरी उम्मत पर बहुत ज़्यादा है क्योंकि रियाकारी तमाम आ'माल को बर्बाद व अकारथ कर देती है। हम इसके ख़तरे से अल्लाह की पनाह चाहते हैं। रियाकारी की ख़तरनाकी नीचे बयान किये जा रहे कामों से ज़ाहिर होती है।

01. रियाकारी मसीह दज्जाल से भी ज़्यादा ख़तरनाक है:

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इशाद फ़र्माया, 'क्या मैं तुम्हें उस चीज़ की ख़बर न दूँ जो मेरे नज़दीक तुम्हारे लिये मसीह दज्जाल से भी ज़्यादा ख़ौफ़नाक है?' रावी कहते हैं कि हमने अर्ज़ किया, 'हाँ! हाँ!! क्यों नहीं?' आप (ﷺ) ने फ़र्माया, 'वो शिकें-ख़फ़ी है कि आदमी नमाज़ के लिये खड़ा होकर नमाज़ पढ़ रहा हो और किसी शख्स को अपनी तरफ़ देखता हुआ पाकर अपनी नमाज़ और ज़्यादा संवार ले।' (इब्ने माजा : 4204)

02. रियाकारी बकरियों के रेवड़ में भेड़िया घुस जाने से भी ज़्यादा बुरी है:

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इशाद फ़र्माया, 'बकरियों के किसी रेवड़ में भेजे गये दो भूखे

भेड़िये इतना ज़्यादा नुक्सान नहीं पहुँचाते जितना कि माल व शरफ़ (श्रेय लेने) की चाहत आदमी के दीन को नुक्सान पहुँचाती है।' (सुनन तिर्मिज़ी : 2376)

माल के लालच में दीन बर्बाद हो जाता है और इसी तरह दीन के नाम पर दुनियावी शरफ़ का लालच भी इन्सान के दीन को ख़राब कर देता है।

03. रियाकारी नेक आ'माल के लिये बहुत बड़ा ख़तरा है:

क्योंकि रियाकारी नेक आ'माल की बरकत को ख़त्म कर देती है। इशादि बारी तआला है,

'वो शख्स जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये खर्च करे; वो न अल्लाह पर ईमान रखता हो न क़यामत पर, उसकी मिश्राल उस स़ाफ़ (चिकने) पत्थर के जैसी है जिस पर थोड़ी सी मिट्टी हो फिर उस पर ज़ोर का मेंह बरसे और वो उसे बिल्कुल स़ाफ़ व स़ख़्त छोड़ दे। उन रियाकारों को अपनी कमाई में कोई चीज़ हाथ नहीं लगती और अल्लाह तआला काफ़िर क़ौम को हिदायत नहीं देता।' (सूरह बक्रः : 264)

ये रियाकारी के वो अफ़रात हैं जो नेक आ'माल को ऐसे वक़्त में पूरी तरह मिटा देंगे जिस वक़्त उस नेक अमल करने वाले इन्सान को उसकी ज़रूरत होगी और वो मजबूर व आजिज़ (बेबस) होकर रह जाएगा। उन नेक आ'माल को वापस लौटाने की उसकी ताक़त भी नहीं होगी। इशादि बारी तआला है,

'क्या तुम में कोई ये चाहता है कि उसके पास खज़ूरों और अंगूरों का बाग़ हो, जिसमें नहरें बह रही हों और हर क्रिस्म के फल मौजूद हों, और उस शख्स का बुढ़ापा आ गया हो और बच्चे छोटे हों और अचानक बाग़ को बगूला लग जाए जिसमें आग भी हो, और वो बाग़ जलकर रह जाए; इसी तरह अल्लाह तआला तुम्हारे लिये आयतें बयान करता है ताकि तुम ग़ौर व फ़िक्र करो।' (सूरह बक्रः : 266)

लिहाज़ा नेक आ'माल की मिश्राल मेवों से भरपूर एक बाग़ की है। ठीक इसी तरह अगर ऐसा कोई इन्सान हो जिसने बहुत सारे नेक आ'माल किये हों, क़यामत के दिन जब जन्नत में दाख़िल होने और जहन्नम से नजात पाने के लिये उसे नेकियों की ज़रूरत हो और पता चले कि वो सारी नेकियाँ उसकी रियाकारी के नतीजे में मिटा दी गई हैं, तो सोचिये उसका क्या हाल होगा? वो कितना बड़ा बदनस़ीब होगा? एक हदीषे-कुदसी में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने रब से रिवायत करते हुए फ़र्माया कि अल्लाह सुब्हानहु व तआला कहता है,

‘मैं शिर्क से, तमाम शरीकों से ज्यादा बेज़ार हूँ। जिसने कोई अमल किया जिसमें मेरे अलावा किसी को शरीक किया तो मैं उसे और उसके शिर्क (दोनों) को छोड़ देता हूँ।’ (सहीह मुस्लिम : 2985)

एक दूसरी हदीष में है,

‘क्रयामत के दिन, जिसके आने में कोई शक नहीं; अल्लाह तआला तमाम अगले और पिछले लोगों को जमा करेगा तो एक आवाज़ लगाने वाला आवाज़ लगाएगा कि जिसने अल्लाह के लिये किये हुए अमल में किसी ग़ैर को शरीक किया हो तो वो उसका प्रवाब भी उसी ग़ैरुल्लाह से तलब करे क्योंकि अल्लाह तआला तमाम शरीकों से ज्यादा बेज़ार है।’ (सुनन तिर्मिज़ी : 3185; इब्ने माजा : 4203)

किसी के मन में यह सवाल उठ सकता है कि रियाकारी शिर्क कैसे है? इसका जवाब यह है कि हर मोमिन का ईमान है कि नेक अमल का अज़र अल्लाह देता है; अब अगर कोई इन्सान नेकी का काम करे और उससे दुनिया के लोगों से ता'रीफ़ चाहे तो गोया उसने उस शख्स को अल्लाह का शरीक बना लिया। इसी तरह नेक आ'माल का बदला जन्नत है; अब अगर कोई शख्स अपने नेक आ'माल के बदले में कोई दुनियावी चीज़ चाहे तो इसका मतलब यह है कि उसने जन्नत में जाने को नापसन्द किया।

04. रियाकारी आख़िरत के अज़ाब का सबब है :

क्रयामत के दिन सबसे पहले जिन लोगों से जहन्नम की आग भड़काई जाएगी, वो तीन किस्म के लोग होंगे; पहला कुआन का क़ारी, दूसरा मुजाहिद, तीसरा अपने माल का सदका करने वाला, ये वो लोग होंगे जिन्होंने इसलिये ये आ'माल किये होंगे ताकि कहा जाए कि ‘फ़लां क़ारी है’, ‘फ़लां बहादुर है’, ‘फ़लां बड़ा सखी और ख़ैरात करने वाला है।’ इनको इसलिये जहन्नम में डाला जाएगा क्योंकि उन्होंने ये नेक आ'माल ख़ालिस अल्लाह के लिये नहीं किये थे। बयान की गई तहरीर सहीह मुस्लिम की हदीष नं. 1905 का खुलासा (सारांश) है, पूरी हदीष काफ़ी लम्बी है।

05. रियाकारी ज़िल्लत व ख़वारी, पस्ती व रुस्वाई का सबब है :

नबी करीम (ﷺ) का इश़ादि गिरामी है,

‘जो शख्स शोहरत के लिये कोई अमल करेगा, अल्लाह तआला उसके ऐबों को ज़ाहिर कर देगा और जो दिखावे के लिये अमल करेगा अल्लाह उसे रुस्वा कर देगा।’ (सहीह बुख़ारी : 6499; सहीह मुस्लिम : 2986)

06. रियाकारी आख़िरत के प्रवाब से महरूम कर देती है :

रसूलुल्लाह (ﷺ) का इश़ादि गिरामी है,

‘इस उम्मत को बरतरी, दीन, रफ़अत व बुलन्दी और ज़मीन में इक्तिदार की बशारत दे दो; इन में से जिसने आख़िरत का कोई अमल दुनिया के लिये अंजाम दिया उसका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होगा।’

(मुस्नद अहमद : 5/134)

07. रियाकारी उम्मत की शिकस्त व पस्याई (हार, पराजय) का सबब है :

नबी करीम (ﷺ) का इश़ादि गिरामी है,

‘बेशक अल्लाह तआला इस उम्मत की नुसरत (मदद) इसके कमज़ोरों की दुआ, उनकी नमाज़ और उनके इख़लास के ज़रिये फ़र्माता है।’

(सुनन निसाई : 3178)

08. रियाकारी गुमराही में बढ़ोतरी करती है :

अल्लाह तआला ने मुनाफ़िक़ीन के बारे में इश़ाद फ़र्माया,

‘वो अल्लाह और मोमिनों को धोखा दे रहे हैं, लेकिन हक़ीक़त में खुद अपने आप को धोखा दे रहे हैं, मगर समझते नहीं। उनके दिलों में बीमारी थी तो अल्लाह ने उनकी बीमारी में और ज्यादा बढ़ोतरी कर दी और उनके झूठ की वजह से उनको दर्दनाक अज़ाब होगा।’ (सूरह बक़र : 9-10)

रियाकारी की किस्में और उसकी बारीकियाँ

रियाकारी की किस्में बहुत ज्यादा हैं, हम उन तमाम किस्मों से अल्लाह की पनाह चाहते हैं।

01. बन्दे का मक्सूद अल्लाह के अलावा (कुछ और) हो और उसकी ख़्वाहिश हो कि लोग उसके कारनामों को जानें। उसको इख़लास की बिल्कुल चाहत न हो।
02. बन्दे का मक्सूद अल्लाह की रज़ा हो लेकिन जब लोगों को इसकी इत्तिहा हो जाए तो वो उस नेक अमल में दिखावे की खातिर और ज्यादा चाक-चौबन्द हो जाए।
03. बन्दा अल्लाह के वास्ते इबादत में दाख़िल हो और अल्लाह ही के वास्ते इबादत से निकले, फिर जब इस चीज़ का लोगों को इल्म हो जाए जाए और उसकी ता'रीफ़ हो तो उसे सुकून व इत्मीनान हासिल हो। वो इस बात की और ज्यादा तमन्ना करे कि लोग उसकी ता'रीफ़ व तौसीफ़ करें और जो कुछ दुनिया में वो चाहता है, वो उसे मिल जाए। ये खुशी, ता'रीफ़ की और ज्यादा चाहत और अपनी दुनियावी चाहत

के मिल जाने की तमन्ना, **छुपी हुई रियाकारी की दलील है।**

04. कोई शख्स चेहरे की ज़र्दी (पीलापन) और जिस्म की कमज़ोरी ज़ाहिर करे; इससे लोगों को ये दिखाना मक़सूद हो कि वो बड़ा इबादतगुज़ार है और उस पर आखिरत का ख़ौफ़ ग़ालिब है। जबकि हकीकत में ऐसा न हो, ये **जिस्मानी रियाकारी है।**
05. कोई शख्स जान-बूझकर पैबन्द लगे कपड़े पहने ताकि लोग कहें कि ये दुनिया से बड़ा बे-रुबत (क़लन्दर, सन्यासी) इन्सान है। या कोई ऐसा लिबास पहने जो एक ख़ास तबक़े के लोग पहनते हों, जिन्हें लोग उलमा की फ़ेहरिस्त (लिस्ट) में गिनते हों, वो ऐसा लिबास इसलिए पहने ताकि लोग उन्हें भी आलिम कहें। **ये लिबास के ज़रिये की जाने वाली रियाकारी है।**
06. कई लोग ऐसे भी होते हैं जो बात-बात में यह जताते रहते हैं कि मैं आलिम हूँ। ये आम तौर पर ऐसे दीनदारों में पाई जाती है जो वा'ज़ व नसीहत, बहस व तकरार, मुनाज़रों व इल्म की ज्यादाती के इज़हार के लिये अह्दादीषे रसूल (ﷺ) व आप़ारे-सहाबा (रज़ि.) को हिफ़ज़ करते हैं ताकि लोग कहें कि दीन की जानकारी तो उसकी ज़बान की नोक पर है। **यह क़ौली रियाकारी है।**
07. रियाकारी की एक किस्म **अमली रियाकारी** भी है। अकेले में जल्दी नमाज़ पढ़ना और जब कोई देख रहा हो तो बना-संवारकर नमाज़ पढ़ना, खुशूअ व खुजूअ ज़ाहिर करना, रोज़े, नमाज़, ज़कात, सदाक़ात में दिखावा करना।
08. रियाकारी की एक किस्म यह भी है कि कोई शख्स अपने साथियों के ज़रिये अपनी फ़ज़ीलत के इज़हार का ख़्वाहिशमंद हो। उसके साथी यह कहें कि फ़लां साहब से मिलने गया था, वो बहुत बड़े आदमी हैं। ऐसे लोगों की चाहत होती है कि कोई नेकी का काम भी तब करें जब कोई लोग आकर उन्हें कहें। **इस किस्म की रियाकारी आलिमों और क़ौम के रहबरों में पाई जाती है।**
09. कुछ लोगों की यह आदत होती है कि वे अपने आपको हकीर व फ़कीर जताते रहते हैं, जबकि दिल में यह होता है कि लोग ये समझें कि यह कितना ख़ाक़सार बन्दा है। यह भी रियाकारी की एक किस्म है। **ऐसे लोग खुद को मुत्तक़ी जताने के लिये जान-बूझकर अपनी कमियों को गिनाते हैं जबकि हदीष में है कि बन्दे के जिस गुनाह पर अल्लाह ने पर्दा डाल दिया हो उसका वो इज़हार न करे।**
10. रियाकारी की बारीकियों और इसरार में एक यह भी है कि अमल करने वाला अपने अमल को छुपाए। लेकिन उसके दिल में यह चाहत हो कि लोग उसे सलाम करने में पहल करें, उससे एहतिराम के साथ मिलें, गर्मजोशी से उसकी ज़रूरत पूरी करें,

ख़रीद व फ़रोख़्त में उसके साथ नमी का बर्ताव किया जाए; और अगर ये सब न किया जाए तो वो दिल ही दिल में रंजीदा हो कि लोगों ने उसकी क़द्र नहीं समझी। गोया कि वो अपनी खुफ़िया नेकियों पर इज़्जत व एहतिराम का तलबगार हो। **ऐसी रियाकारी आम तौर पर दिखावटी सूफी किस्म के लोगों में पाई जाती है।**

11. रिया की एक बारीकी यह भी है कि इन्सान इख़लास को अपने मक़सद को हासिल करने का ज़रिया बनाए। शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया (रहि.) फ़र्माते हैं, 'बयान किया जाता है कि अबू हामिद ग़ज़ाली को ये मा'लूम हुआ कि जो शख्स चालीस दिन तक अल्लाह के लिये इख़लास अपनाएगा तो 'हिक्मत' उसके दिल से निकलकर उसकी जुबान पर जारी हो जाएगी। अबू हामिद ग़ज़ाली फ़र्माते हैं कि मैंने भी चालीस रोज़ तक इख़लास अपनाया तो कुछ भी न हुआ। मैंने एक आरिफ़ बिल्लाह (अल्लाह के नेक बन्दे, तपस्वी) से इसका ज़िक्र किया तो उन्होंने मुझसे कहा कि तुमने हिक्मत के लिये इख़लास अपनाया था, अल्लाह के लिये नहीं। इसलिये कोई नतीजा नहीं निकला।' (दरअ तआरुज़ अल अक्ल वन् नक्ल, अज़ इब्ने तैमिया : 6/66; मिन्हाजुल क़ासिदीन, पेज : 214-221; अल इख़लास, अज़ अवाइशह, पेज : 24; अल इख़लास वशिर्किल अस्मार, अज़ डॉ. अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल लतीफ़, पेज : 9, अर रिया, अज़ सलीम हिलाली, पेज : 17)

रियाकारी की इन तमाम किस्मों और बारीकियाँ जान लेने के बाद रियाकारी से बचने की यही तदबीर (उपाय) समझ में आती है कि बन्दा कोई भी नेक काम करे तो उसके मन में एक ही बात हो कि उसका ख़ब उसे देख रहा है; उस नेक काम के ज़रिये उसकी चाहत हो कि अल्लाह उससे राज़ी हो जाए। दुनिया उसे अच्छा समझ रही है या बुरा, इसकी वो परवाह भी न करे।

रियाकारी का अमल पर अघ़र

01. **अमल सरासर दिखावा हो।** उसका मक़सद दुनिया को दिखाने के सिवा कुछ न हो। कुअनि करीम में अल्लाह तआला मुनाफ़िकों का हाल बयान करते हुए फ़र्माता है, 'और जब वे नमाज़ के लिये खड़े होते हैं तो सिर्फ़ लोगों को दिखाते हैं और अल्लाह का ज़िक्र बहुत कम करते हैं।' (सूरह निसा : 142)

ये ख़ालिस रियाकारी किसी मोमिन से तो फ़र्ज़ नमाज़ या रोज़ों में तो सादिर नहीं होती अलबत्ता वाजिब सदाक़ा या हज़्ज या इनके अलावा दीगर ज़ाहिरी आ'माल में नज़र आ सकती हैं।

02. अमल तो अल्लाह के लिये हो लेकिन शुरू से आखिर तक उसमें रियाकारी शामिल हो तो ऐसा अमल सहीह नुसूस की रोशनी में बातिल व रायगां (निरर्थक) है।

03. असल अमल तो खालिस अल्लाह के लिये हो, फिर इबादत के दौरान उसमें रियाकारी की निव्यत शामिल हो गई हो। इसकी दो सूरतें हो सकती हैं,

(अ). पहली सूरत ये कि नेक अमल के शुरूआती हिस्से का आखिरी हिस्से के साथ कोई जुड़ाव न हो, इस हालत में पहला हिस्सा सहीह व आखरी हिस्सा बातिल होगा। इसकी मिषाल यूँ समझें कि एक आदमी के पास दो हजार रुपये थे, जिसका वो सदका करना चाहता था। इसमें से एक हजार रुपये तो उसने खालिस अल्लाह के लिये सदका कर दिये। फिर बाकी एक हजार रुपये में रियाकारी शामिल हो गई। **इस तरह पहला सदका तो कुबूल होगा और दूसरा सदका बातिल होगा क्योंकि उसमें इखलास के साथ रियाकारी भी शामिल थी।**

(ब). दूसरी सूरत ये है कि नेक अमल के शुरूआती हिस्से का आखरी हिस्से के साथ रब्त (जुड़ाव) हो। इसमें भी दो सूरतेहाल हो सकती हैं। पहली; रियाकारी उसके दिल में खटकती हो और उसने उसे दूर कर दिया हो और उसकी तरफ तवज्जह नहीं की हो बल्कि उसे ए'राज (घृणा) और नापसन्दी की हो। इस सूरत में उस शख्स के नेक अमल को रियाकारी से नुक्सान नहीं पहुँचेगा क्योंकि नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद है, 'बेशक अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के दिलों में खटकने वाली चीजों (वस्वसों) को मुआफ़ कर दिया है; जब तक कि वो उसे कह न दें या उस पर अमल न कर लें।' (सहीह मुस्लिम : 127)

दूसरी हालत यह है कि रियाकारी उसके साथ बदस्तूर लगी रहे और वो उससे मुतमईन (संतुष्ट) हो; उसे दफ़ा भी न करे बल्कि उससे खुश हो। ऐसी हालत में सहीह राय के मुताबिक़ उसके सारे नेक आ'माल बर्बाद हो जाएंगे क्योंकि शुरूआती हिस्सा आखरी हिस्से के साथ पूरी तरह जुड़ा हुआ है।

04. रियाकारी इबादत या नेक अमल से फ़ारिग होने के बाद हो। अगर कोई मुसलमान खालिस अल्लाह के लिये कोई अमल करे, फिर अल्लाह तआला उसके ता'ल्लुक से मुसलमानों के दिलों में अच्छी बात व ता'रीफ़ डाल दे और अल्लाह के फ़ज़ल व रहमत से वो शख्स खुश हो जाए, तो इससे उसे कोई नुक्सान नहीं पहुँचेगा। अल्लाह के रसूल (ﷺ) से उस शख्स के बारे में पूछा गया जो खालिस अल्लाह की रज़ा के लिये भलाई का अमल करे फिर लोग उसकी ता'रीफ़ करें, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, 'ये मोमिन के लिये फ़ौरी खुशख़बरी है।' (सहीह मुस्लिम : 2642)

रियाकारी के कारण व उस पर उभारने वाले काम

रियाकारी की जड़, रूतबे व मर्तबे की मुहब्बत और इस बात की चाहत है कि लोग सिर्फ़ उसी को अच्छा समझें। जिसके दिल पर इसकी मुहब्बत हावी हो जाती है उसकी सारी फ़िक्र मख़्लूक की रिआयत, उनका चक्कर लगाने और उनको दिखाने के लिये किये जाने वाले कामों में महदूद (सीमित) होकर रह जाती है। वो अपनी तमाम बातों और कामों और तमाम हरकत व हथकण्डों के ज़रिये हमेशा उन चीज़ों की तरफ़ मुतवज्जह हो जाता है जिनके ज़रिये लोगों में उसका मक़ाम व मर्तबा ऊँचा हो। बीमारी और मुसीबत की यही जड़ व बुनियाद है। जिस शख्स के अन्दर ये ख़्वाहिश होती है उसे नेक कामों में भी रियाकारी करने की आदत पड़ जाती है। **ये बड़ा ही नाज़ुक और पेचीदा बाब है जिसे अल्लाह अज़्ज व जल से मा'रिफ़त (घनिष्ठता, दिली मुहब्बत) रखने वाले लोग ही जान सकते हैं।** अगर इस तबाहकारी मर्ज़ (बीमारी) की तफ़्सील की जाए तो वो नीचे लिखे तीन उसूलों की तरफ़ लौटेंगा,

01. अपनी ता'रीफ़ की चाहत और उसकी लज़्जत से मुहब्बत।

02. अपनी मज़्ममत (निन्दा) और बुराई से दूर भागना व उससे चिढ़ना।

03. (दूसरे) लोगों के पास जो कुछ है उसका लालच।

(मिन्हाजुल कासिदीन, अज़ इब्ने कुदामा पेज : 221-222)

इन बातों की शहादत (गवाही) हज़रत अबू मूसा अशअरी की हदीष में ज़िक्र की गई बातों से मिलती है। वो बयान करते हैं कि एक शख्स नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा, 'आदमी बहादुरी और शुजाअत के जौहर दिखाने के लिये जिहाद करता है; और ग़ैरत व हमिय्यत के लिये जिहाद करता है; और दिखावे की ख़ातिर जिहाद करता है, तो उनमें से कौन अल्लाह की राह में (जिहाद करने वाला) है?' तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, 'जो अल्लाह के कलिमे की सरबुलन्दी के लिये जिहाद करे वो अल्लाह की राह में (जिहाद करने वाला) है।' (सहीह बुखारी : 2810; सहीह मुस्लिम : 1904)

इस हदीष की तशरीह (व्याख्या) करने पर नीचे लिखी बातें सामने आती हैं,

01. उस शख्स का ये कहना, '**बहादुरी के जौहर दिखाने के लिये जिहाद करता है**' का मफ़हूम (भावार्थ) यह है कि उसकी ये चाहत होती है कि उसे बहादुर कहा जाए, उसका नाम लिया जाए, उसकी क़द्रदानी की जाए और उसकी ता'रीफ़ हो।

02. '**ग़ैरत व हमिय्यत के लिये जिहाद करता है**' का मतलब यह है कि वो मज़्लूब (पराजित) होने या मज़्ममत (निन्दा) किये जाने से नफ़रत करता है। (या'नी वो

इसलिये लड़ता है क्योंकि उसे महसूस होता है कि उसकी बात नहीं सुनी जा रही है या उसे दबाया जा रहा है या वो इसलिये लड़ता है कि कुछ लोग उसकी बातों की काट कर रहे हैं और वो इसे अपनी गौरव व हमिय्यत के खिलाफ मानते हुए अपनी ज़ात की खातिर उन पर हमलावर हो जाता है।)

03. **'दिखावे की खातिर जिहाद करता है'** का मा'नी ये है कि वो ये चाहता है कि उसके तक़वे और दीनदारी की ता'रीफ़ हो (और लोग ये समझें कि ये शख्स इस्लाम की खातिर लड़ रहा है)। यही वो चीज़ है जिसका नाम दिल के अन्दर रूतबे और मंज़िलत की लज़्जत का पैदा होना है। कभी इन्सान मदह व सताइश (ता'रीफ़ और बड़ाई) की ख्वाहिश करता है लेकिन मज़म्मत (निन्दा) से डरता है। लिहाज़ा मज़म्मत के ख़ौफ़ से वो बहादुरी का पुबूत देता है और पीछे हटने की राह नहीं अपनाता (भले ही इससे उम्मत का कितना ही बड़ा नुक़सान हो जाए)। **इसी तरह कभी इन्सान जाहिल कहे जाने के डर से बिना इल्म के फ़तवे जारी कर देता है।**

लिहाज़ा यही तीन चीज़ें रियाकारी का कारण है और उसके लिये उभारने वाली हैं, इनसे हर मुसलमान को बचकर रहना चाहिये।

इख़लास हासिल करने के तरीक़े और रियाकारी का इलाज

अब तक की तहरीर से ये बात मा'लूम हो गई है कि रियाकारी नेक अमल को बर्बाद करने वाली, अल्लाह के गुस्से व ग़ज़ब को भड़काने वाली, अल्लाह की नाराज़गी का कारण और मुसलमानों के लिये मसीह दज्जाल के फ़ितने से भी ज़्यादा ख़तरनाक है। इसकी ख़ौफ़नाकी (भयावहता) को देखते हुए यह बेहद ज़रूरी है कि पूरी त़ाक़त लगाकर और जी-तोड़ कोशिश करके इसका इलाज किया जाए, इसकी रंगें और जड़ें काट दी जाएं। रियाकारी के इज़ाले (निवारण), नेक कामों के ज़रिये दुनिया-तलबी से बचने और इख़लास हासिल करने के लिये नीचे लिखे तरीक़े कारगर हो सकते हैं,

01. दुनिया की खातिर किये जाने वाले आ'माल और रियाकारी के कारणों, इसकी क्रिस्मों और इस पर उभारने वाली चीज़ों की पहचान करना और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकना।
02. कुआन व हदीष में अल्लाह तआला के जो नाम आए हैं और जो सिफ़ात बयान हुई हैं, उनकी सहीह मा'रिफ़त (पहचान) के ज़रिये अल्लाह की अज़मत (महानता) और जलाल (रौब) का इल्म हासिल करना। जब बन्दे को इसकी जानकारी होगी तो वो एक अल्लाह को नफ़ा-नुक़सान का मालिक, इज़्जत व ज़िल्लत देने वाला, पस्ती व बरतरी देने वाला, ज़िन्दगी व मौत का मालिक

समझेगा। अल्लाह को सहीह तौर पर पहचान लेने के बाद उसे मा'लूम होगा कि अल्लाह ख़यानत करने वाली आँखों और सीने में छुपे राज़ों को जानने वाला है और एक अल्लाह ही हर क्रिस्म की इबादत के लायक़ है। ये सारी चीज़ें इख़लास और अल्लाह के साथ दिल की सच्चाई पैदा करेगी, लिहाज़ा तौहीद की तमाम क्रिस्मों की सहीह पहचान होना ज़रूरी है।

03. **आख़िरत के लिये अल्लाह की तैयारकर्दा ने'मतों व अज़ाब, मौत की हौलनाकियों और अज़ाबे-क़ब्र वगैरह की जानकारी हासिल करना।** जब बन्दे को इन चीज़ों का इल्म होगा और अगर वो समझदार होगा तो वो रियाकारी और दुनिया-तलबी के लिये आ'माल करना छोड़कर इख़लास अपनाएगा।

04. **दुनिया के लिये अमल करने और रियाकारी के ख़तरे से डरना।** जो किसी चीज़ से डरता है वो उससे बचता रहता है और नज़ात पाता है। लिहाज़ा इन्सान के लिये ये मुनासिब बल्कि ज़रूरी है कि जब उसकी ख्वाहिश उसे अपनी ता'रीफ़ (आत्म-प्रशंसा) की आफ़त की तरफ़ आमदा करे या 'नी उसके मन में यह ख़याल आए कि फ़लां काम के लिये लोग मेरी ता'रीफ़ करें तो उसे चाहिये कि वो अपने नफ़्स को रियाकारी की आफ़तों और अल्लाह की नाराज़गी से डराए। जब इन्सान किसी मुहताज और कमज़ोर इन्सान को देखता है तो उसे अपनी ज़िन्दगी में हासिल राहत का एहसास होता है। बाज़ सलफ़-सालिहीन ने कहा है, **'अपनी ज़ात से रियाकारी के कारणों को दूर करने के लिये अपने नफ़्स से जिहाद करो, कोई इन्सान तुम्हें देखे या न देखे मगर तुम अपनी इबादत में कोई फ़र्क़ न करो बल्कि अल्लाह देख रहा है, यह सोचते हुए अमल करो।'**

अल्लाह के फ़ज़ल व करम और अपने आ'माल के बर्बाद हो जाने के ख़ौफ़ से अहले इल्म (ज्ञानी लोग) रियाकारी और दुनिया-तलबी के कामों से बचते रहे हैं। मुहम्मद बिन लबीद (रज़ि.) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया,

'मुझे सबसे ज़्यादा जिस चीज़ का ख़ौफ़ है वो शिक़े-अस्नार (छोटा शिक़) है।' सहाबा ने अर्ज किया, **'ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! शिक़े-अस्नार क्या है?' आप (ﷺ) ने फ़र्माया, 'रियाकारी। क़यामत के दिन जब अल्लाह तआला लोगों को उनके आ'माल का बदला देगा तो रियाकारों से कहेगा कि दुनिया में जिन्हें दिखाने के लिये तुम आ'माल किया करते थे उन्हीं के पास जाओ, (फिर) देखो कि उनसे तुम्हें क्या मिलता है?' (मुस्नद अहमद : 5/428)**

इसी अजीम खतरे के कारण सहाब-ए-किराम, ताबिईन और इल्म व ईमान रखने वाले लोग अल्लाह तआला के ग़ज़ब व गुस्से से हमेशा डरते थे। नीचे चन्द मिश्रालें बयान की जा रही हैं, उन पर गौर कीजिये,

- (1). अल्लाह अज़्ज व जल का इर्शाद है, **‘और जो लोग (अल्लाह की राह) में देते हैं और उनके दिल कपकपाते हैं कि उन्हें अपने खब की तरफ लौटना है।’** (सूरह मोमिनून : 60)

हज़रत आइशा सिद्दीका (रज़ि.) ने पूछा, ‘ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या इससे वो शख्स मुराद (अभिप्राय) है जो ज़िना, चोरी और शराबखोरी करता है?’ आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ‘नहीं, ऐ अबू बक्र (या सिद्दीक) की बेटी! बल्कि ये वो शख्स है जो रोज़े रखता है, सदाक़ा करता है, नमाज़ें पढ़ता है; फिर भी उसे इस बात का ख़ौफ़ होता है कि (कहीं) उसकी नेकियाँ कुबूल न हों? (तो क्या होगा?)’ (सुनन इब्ने माजह : 4198; तिर्मिज़ी : 3175)

- (2). इब्ने अबी मुलैका (रहि.) फ़र्माते हैं कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के तीस सहाबा को पाया, वो सब के सब अपने-आप पर निफ़ाक़ का ख़तरा महसूस करते थे। उनमें से कोई भी यह न कहता था कि वो जिब्रील व मीकाईल (अलैहिस्सलाम) के ईमान पर है। (फ़तुल बारी : 1/110)

- (3). हज़रत इब्राहीम तैमी (रहि.) फ़र्माते हैं कि मैंने जब भी अपने क़ौल को अपने अमल पर पेश किया तो मुझे ख़ौफ़ हुआ कि कहीं मैं झुठलाने वालों में से तो नहीं हूँ? (फ़तुल बारी : 1/110)

- (4). हज़रत हसन (रहि.) कहते हैं, **‘रियाकारी से मोमिन ही डरता है और इससे मुनाफ़िक़ ही मामून (निडर) रहता है।’** (फ़तुल बारी : 1/111)

- (5). हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) को अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने मदीना के कुछ मुनाफ़िक़ों के नाम बताए थे। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से कहा, **‘मैं तुम्हें अल्लाह का वास्ता देता हूँ, क्या तुमसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरा नाम भी मुनाफ़िक़ों में से बताया है?’** उन्होंने जवाब दिया, **‘नहीं! लेकिन आपके बाद मैं किसी और का तज़किया नहीं करूँगा। (या) नी अब और किसी के बारे में जानकारी नहीं दूँगा।’** (अल बिदाया वन् निहाया : 5/19; सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन अज़ इब्ने क़य्यिम रहि., पेज : 36)

- (6). हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) ने फ़र्माया, **‘ऐ अल्लाह! मैं निफ़ाक़ के ख़ुशूअ से तेरी पनाह चाहता हूँ।’** उनसे पूछा गया, **‘निफ़ाक़ का ख़ुशूअ क्या है?’** तो उन्होंने

जवाब दिया, **‘जब तुम देखो कि जिस्म से ख़ुशूअ (भावपूर्ण भक्ति) का इज़हार हो रहा है लेकिन दिल उससे ख़ाली है।’** (सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन अज़ इब्ने क़य्यिम रहि., पेज : 36)

- (7). हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) ने फ़र्माया, ‘अगर मुझे यकीन हो जाए कि अल्लाह ने मेरी एक नमाज़ कुबूल फ़र्मा ली है, तो मेरे नज़दीक ये दुनिया और उसकी तमाम नेमतों से भी ज़्यादा महबूब (प्रिय) है।’ कुर्आनि करीम में अल्लाह तआला इर्शाद फ़र्माता है, **‘बेशक अल्लाह मुत्तक़ियों ही से कुबूल फ़र्माता है।’** (सूरह माइदह : 27) इसे इमाम इब्ने क़प्पीर (रहि.) ने अपनी तफ़सीर (इब्ने क़प्पीर : 2/41) में ज़िक़्र किया है और इब्ने अबी हातिम (रहि.) की तरफ़ इसे मंसूब किया है।

- (8). हज़रत अब्दुर्रहमान बिल अबी लैला (रहि.) फ़र्माते हैं, **‘मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के 120 अन्सारी सहाबा को पाया। उनमें से किसी से भी कोई मसला पूछा जाता तो हर एक यही चाहता कि उसका कोई भाई (मसला बताकर) उसकी तरफ़ से किफ़ायत कर दे।’** (सुनन दारमी : 1/53)

05. अल्लाह की मज़म्मत से फ़रार होना (दूर भागना); या’नी उस चीज़ से दूर भागना जिसकी वजह से वो अल्लाह के यहाँ दुत्कार दिया जाए और अल्लाह उसकी बुराई बयान करे। दुनिया के लोगों की मज़म्मत (निन्दा) से दूर भागना और डरना, रियाकारी की निशानी है। हर अक्लमंद जानता है कि उसके लिये अल्लाह की मज़म्मत से बचना ज़्यादा ज़रूरी है क्योंकि यह ऐब की चीज़ है। एक शख्स ने अल्लाह के रसूल (ﷺ) से कहा, **‘ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मेरी ता’रीफ़ ज़ीनत का कारण है और मेरी मज़म्मत ऐबदार करने वाली है।’** तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, **‘ये अल्लाह की ख़ुसूसियत (विशिष्टता) है।’** (मुस्नद अहमद : 3/488; तिर्मिज़ी : 3263)

इसमें कोई शक नहीं कि बन्दा जब लोगों से डरता है और अल्लाह को नाराज़ करके लोगों को खुश करता है तो अल्लाह तआला उस पर ग़ज़बनाक हो जाता है। जिस पर अल्लाह का गुस्सा नाज़िल हो उससे दुनिया का कोई भी इन्सान राज़ी नहीं हो सकता क्योंकि सबके दिलों का मालिक अल्लाह तआला है। इसलिये इन्सान के लिये बेहतर यही है कि वो अल्लाह की नाराज़गी, गुस्से और ग़ज़ब से डरे।

06. जिन चीज़ों से शैतान दूर भागता है, उनकी मा’रिफ़त हासिल करना। शैतान रियाकारी की जड़ व बुनियाद है। हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) को सज्दा करने के अल्लाह के हुक्म से इन्कार करते वक़्त उसने तकब्बुर और रियाकारी का ही इज़हार (प्रदर्शन) किया था। शैतान बहुत सी चीज़ों से दूर भागता है; अज़ान,

तिलावते कुआन, सज्द-ए-तिलावत, शैतान के शर से अल्लाह की पनाह तलाब करना, बिस्मिल्लाह कहना, मसनून दुआएं पढ़ना, सुबह व शाम के अज़कार, नमाज़ के बाद के अज़कार और तमाम मसनून अज़कार की पाबन्दी करना।

07. ख़ैर के काम और नज़रों में न आने वाली ख़ुफ़िया इबादतें ज़्यादा करना और उन्हें लोगों की निगाह से पोशीदा (गुप्त) रखना; जैसे क़यामुल्लैल (तहज्जुद), छुपाकर किया हुआ स़दक़ा, तन्हाई (एकान्त) में अल्लाह के ख़ौफ़ से रोना, नफ़ल नमाज़ें, दीनी भाइयों के लिये उनकी ग़ैर-मौजूदगी में दुआएं करना। याद रखिये अल्लाह तआला ख़ुफ़िया मुत्तक़ी, परहेज़गार बन्दे से मुहब्बत करता है।

हज़रत स़अद बिन अबी वक्कास (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़र्माते हुए सुना, 'बेशक अल्लाह अज़्ज व जल पोशीदा मालदार व तक्रबा-शिआर बन्दे से मुहब्बत करता है।' (सहीह मुस्लिम : 2965)

08. लोगों की मज़म्मत (निन्दा) या ता'रीफ़ की परवाह न करना : क्योंकि इससे न तो नुक़सान पहुँचता है और न नफ़ा बल्कि ज़रूरी है कि बन्दे के दिल में अल्लाह की मज़म्मत का ख़ौफ़ हो और अल्लाह के फ़ज़ल व एहसान से उसे ख़ुशी महसूस हो।

अल्लाह अज़्ज व जल का इर्शाद है, 'आप कह दीजिये कि लोगों को बस अल्लाह ही के फ़ज़ल व इन्आम और रहमत पर ख़ुश होना चाहिये; वो उस चीज़ से बहुत बेहतर है जिसे वो जमा करते हैं।' (सूरह यूनुस : 58)

अपनी मज़म्मत करने वाले को देखिये। अगर वो अपने इल्ज़ाम में सच्चा है तो आप अपनी इस्लाम कीजिये और अगर वो झूठा इल्ज़ाम लगा रहा है तो उसकी परवाह करने की ज़रूरत नहीं क्योंकि क़यामत के दिन उसे इसके बदले नेकियाँ देकर या आपके गुनाह ओढ़कर इसकी क़ीमत चुकानी पड़ेगी। इस तरह आपकी मज़म्मत करने वाला एक तरह से ख़ुद का ही नुक़सान कर रहा है क्योंकि उसने अपनी ज़ात पर ज़ुल्म किया है। लिहाज़ा आप उससे बेहतर बनकर दरगुज़र का मुआमला करें। अल्लाह चाहेगा तो उसे नेक हिदायत दे देगा और नहीं चाहेगा तो उस पर अपना अज़ाब नाज़िल करेगा।

इर्शादि बारी तआला है, 'क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़र्मा दे और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है।' (सूरह नूर : 22)

09. आरज़ुओं को कम करना और मौत को याद करना; इर्शादि बारी तआला है, 'हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है और क़यामत के दिन तुम्हें अपना

पूरा बदला दिया जाएगा। जो शख्स आग से हटा लिया जाए और जन्नत में दाख़िल कर दिया जाए वो कामयाब हो गया और दुनिया की ज़िन्दगी तो धोखे का सामान है।' (सूरह आले इमरान : 185)

'कोई भी नहीं जानता कि कल क्या करेगा? न किसी को मा'लूम है कि किस ज़मीन में मरेगा? बेशक अल्लाह जानने वाला और ख़बर रखने वाला है।' (सूरह लुक़्मान : 34)

10. बुरे ख़ात्मे का ख़ौफ़ रखना; बन्दे को इस बात से डरना चाहिये कि कहीं रियाकारी और दिखावे के कारण अगर ईमानवाले की मौत नज़ीब न हुई तो क्या होगा? ऐसी सूरत में आख़िरत में उससे ज़्यादा घाटे में रहने वाला और कोई नहीं होगा।

11. मुख़िलस और मुत्तक़ी लोगों की सुहबत इख़्तियार करना; इन्सान पर उसकी संगत का अषर पड़ता है। बन्दा जब नेक, मुख़िलस और मुत्तक़ी लोगों की सुहबत में रहेगा तो उनसे अच्छी बातें सीखेगा और वो लोग उसे बुरे रास्ते पर चलने से भी रोकेगा। बुरे लोगों की संगत में नेकियों को बर्बाद करने वाली बुराई में पड़ने का अंदेशा है।

12. अल्लाह से दुआ करना और उसकी पनाह माँगना; रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, 'ऐ लोगों! इस शिर्क (रियाकारी) से बचो क्योंकि ये चींटी की चाल से भी ज़्यादा छुपा हुआ है।' स़हाबा (रज़ि.) ने पूछा, 'ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! जब ये चींटी की चाल से भी पोशीदा और बारीक है तो हम इससे कैसे बच सकते हैं?' आप (ﷺ) ने फ़र्माया, 'यह कहा करो, ऐ अल्लाह! हम इस बात से तेरी पनाह चाहते हैं कि किसी ऐसी चीज़ को तेरा शरीक बनाएं जिसे हम जानते हों और तुझसे उस चीज़ की बख़्शिश माँगते हैं जिसे हम नहीं जानते हों।' (मुस्नद अहमद : 4/403; सहीह बयहक़ी जामेअ : 3/233)

13. बन्दे की यह चाहत हो कि अल्लाह उसे याद करे; इसके लिये इन्सान को चाहिये कि वो अल्लाह की याद को सारी मख़लूक से ऊँचा मक़ाम दे। इर्शादि बारी है, 'तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद करूँगा।' (सूरह बक़र : 152)

नबी करीम (ﷺ) ने हदीषे-कुदसी में अपने रब से रिवायत करते हुए फ़र्माया, 'मैं अपने सिलसिले में अपने बन्दे के गुमान के साथ होता हूँ। जब वो मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ। अगर वो अपने नफ़्स में मुझे याद करता है तो मैं उसे अपने नफ़्स में याद करता हूँ। और अगर वो मुझे किसी जमाअत में याद करता है तो मैं उससे बेहतर जमाअत (फ़रिशतों) में उसे

याद करता हूँ। और अगर वो मुझसे एक बालिशत करीब होता है तो मैं उससे एक हाथ करीब होता हूँ। अगर वो एक हाथ के ब-क्र (मात्रा में) मेरे करीब होता है तो मैं दोनों हाथों के बीच की दूरी के बराबर उसके करीब होता हूँ। और अगर वो मेरे पास चलकर आता है तो मैं उसके पास दौड़कर आता हूँ।' (सहीह बुखारी : 7405; सहीह मुस्लिम : 2675)

14. लोगों के हाथ में जो कुछ है, उसका लालच न करना; क्योंकि ये लालच इखलास के खिलाफ है। एक मोमिन के दिल में ये दोनों चीजें उसी तरह एक साथ इकट्ठी नहीं हो सकतीं जिस तरह आग और पानी एक साथ इकट्ठे नहीं हो सकते। जो कुछ लोगों के पास है, उनके हाथ में है, देना या न देना उनकी मर्जी पर निर्भर करता है, ऐसी चीज का लालच अपने दिल से पूरी तरह निकाल देने के बाद ही इखलास और तक्वा दिल में जगह बनाता है। लोगों से किसी चीज की उम्मीद लगाने से बेहतर है कि इन्सान अल्लाह से उम्मीद की लौ लगाए, जो तमाम खज़ानों का मालिक है।

15. इखलास के फ़ायदों और नेक अंजाम की मा'रिफ़त हासिल करना; यह बात हर वक़्त याद रहनी चाहिये कि इखलास की बरकत से अल्लाह की मदद और अल्लाह के अज़ाब से छुटकारा मिलता है। आख़िरत में मंज़िलें और दर्जे बुलन्द होते हैं। अल्लाह अज़्ज व जल और ज़मीनो-आसमान की तमाम मख़लूक उससे मुहब्बत करने लगती है जिसकी वजह से उसे इज्जत, शोहरत, नेकनामी, दुनिया व आख़िरत की मुसीबतों और गुमराही से नजात मिलती है। परेशानियों और दुश्वारियों में बर्दाश्त की त्वाक़त, अल्लाह की ज़ात पर भरोसा व इत्मीनान जैसी ने'मते नसीब होती हैं। इखलास की वजह से दुआएं कुबूल होती हैं, क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह हासिल होती है। जब बन्दे को इन तमाम चीज़ों का एहसास व यक़ीन हो जाए तो उसके दिल से दुनिया-तलबी का लालच और रियाकारी पूरी तरह निकल जाती है।

लिहाज़ा हमें अगर इखलास की बरकतों और अल्लाह की खुशनूदी की चाहत हो तो हमें रियाकारी से बचने की पूरे तौर पर कोशिश करनी चाहिये। अपने नेक आ'माल को दुनियावी साज़ो-सामान की चाहत के बदले में बेचकर बर्बाद नहीं करने चाहिये।

मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि वो मुझे, आपको, मुसलमानों के हर ख़ास व आम को, नीज़ अइम्म-ए-किराम और दीनी मामलात में सरगर्म लोगों को रियाकारी और आख़िरत वाले नेक आ'माल के ज़रिये दुनिया-तलबी की ख़तरनाक बला व मुसीबत से महफूज़ रखे, आमीन!

ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल् अलियिल् अज़ीम।